कथा सरिता

असली शांति

किसी नगर में एक अमीर व्यक्ति रहता था। उसके पास बहुत सारी संपत्ति, बहुत बड़ी हवेली और नौकर-चाकर थे। फिर भी उसके मन में शांति नहीं थी। एक दिन किसी ने बताया कि पास के इलाके में एक साधु रहते हैं। वे लोगों को ऐसी सिद्धि देते हैं, जिससे मनचाही चीज़ें मिल जाती हैं।

वह अमीर आदमी उस साधु के पास गया और उसे प्रणाम करके बोला, महाराज, मेरे पास पैसे की कमी नहीं है, पर मेरा मन बहुत अशांत रहता है। आप कुछ ऐसा उपाय दीजिए कि मेरी अशांति दूर हो जाए। सेठ ने सोचा कि साधु बाबा उसे कोई ताबीज़ दे देंगे या फिर कुछ और कर देंगे, जिससे उसकी इच्छा पूरी हो जाएगी। लेकिन साधु ने ऐसा कुछ भी नहीं किया।

अगले दिन उन्होंने सेठ को धूप में बिठाए रखा और स्वयं अपनी कुटिया के अंदर छाँव में जाकर चैन से बैठ गए। गर्मी के दिन थे। सेठ का बुरा हाल हो गया। उसको बहुत गुस्सा आया पर वह उसे चुपचाप पी गया।

दूसरे दिन साधु ने कहा, आज तुम्हें दिन भर खाना नहीं मिलेगा। भूख के मारे दिन भर सेठ के पेट में चूहे कूदते रहे, अन्न का एक दाना भी उसके मुँह में नहीं गया, लेकिन उसने देखा कि साधु ने उसी के सामने बैठकर बड़े आनन्द से भोजन किया। सेठ सारी रात परेशान रहा। उसे एक क्षण भी नींद नहीं आई। वह सोचता रहा कि साधु तो बड़ा स्वार्थी है। तीसरे दिन सवेरे ही उठकर उसने अपना बिस्तर बांधा और चलने को तैयार हो गया। तभी साधु उसके सामने आकर खड़े हो गए और बोले, सेठ क्या हुआ? सेठ ने कहा, मैं यहाँ बड़ी आशा लेकर आपके पास आया था, लेकिन मुझे यहाँ कुछ नहीं मिला, उल्टा मुझे ऐसी मुसीबतें उठानी पड़ी, जो मैंने जीवन में कभी नहीं उठाई। मैं जा रहा हूँ।

साधु हँसकर बोले, मैंने तुझे इतना कुछ दिया, पर तूने कुछ भी नहीं लिया। सेठ ने आश्चर्य से साधु की ओर देखा और बोला, 'आपने तो मुझे कुछ भी नहीं दिया।' साधु ने कहा, सेठ पहले दिन जब मैंने तुझे धूप में बिठाया और खुद छाँव में बैठा रहा तो इसके ज़रिए मैंने तूझे बताया कि मेरी छाँव तुम्हारे काम नहीं आ सकती। जब तुम्हें मेरी वो बात समझ में नहीं आई तो दूसरे दिन मैंने तूझे भूखा रखा और खुद खूब अच्छी तरह खाना खाया। उससे मैंने तूझे समझाया कि मेरे खा लेने से तुम्हारा पेट नहीं भर सकता।

सेठ याद रखो मेरी साधना से तुम्हें सिद्धि नहीं मिलेगी। अध्यात्म एक ऐसी राह है, जहां मंज़िल तक पहुंचने के लिए खुद ही यात्रा करनी पड़ती है। मैं तुझे राह बता सकता हूँ, लेकिन चलना तुझे खुद ही होगा। धन तूने खुद अपने पुरुषार्थ से कमाया है और शांति भी तूझे अपने ही पुरूषार्थ से मिलेगी। सेठ की आंखें खुल गई और उसे अपनी मंज़िल तक पहुंचने का रास्ता मिल गया।

सकारात्मक दृष्टिकोण

एक 6 वर्ष का लड़का अपनी 4 वर्ष की छोटी बहन के साथ बाज़ार से जा रहा था। अचानक से उसे लगा कि उसकी बहन पीछे रह गयी है। वह रुका, पीछे मुड़कर देखा तो जाना कि उसकी बहन एक खिलौने की दुकान के सामने खड़ी कोई चीज़ निहार रही है। लड़का पीछे आता है और बहन से पूछता है कि कुछ चाहिए तुम्हें? लड़की एक गुड़िया की तरफ उंगली उठाकर दिखाती है। बच्चा उसका हाथ पकड़ता है। एक ज़िम्मेदार बड़े भाई की तरह अपनी बहन को वह गुड़िया देता है। बहन बहुत खुश हो जाती है।

दुकानदार यह सब देख रहा होता है। बच्चे का व्यवहार देखकर आश्चर्यचकित भी हुआ। अब वह बच्चा बहन के साथ काउंटर पर आया और दुकानदार से पूछा, "सर, कितनी कीमत है इस गुड़िया की?" दुकानदार एक शांत व्यक्ति था। उसने जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखे होते हैं। उन्होंने बड़े प्यार और अपनत्व से बच्चे से पूछा, बताओ बेटे, आप क्या दे सकते हो? बच्चा अपनी जेब से वो सारी सीपें बाहर निकालकर दुकानदार को देता है, जो उसने थोड़ी देर पहले बहन के साथ समुंदर किनारे से चुन-चुन कर इकट्ठी की थी। दुकानदार वो सब लेकर युं गिनता है जैसे पैसे गिन रहा हो। सीपें गिनकर वो बच्चे की तरफ देखने लगा तो बच्चा बोला, सर कुछ कम हैं क्या?

दुकानदार - नहीं-नहीं ये तो इस गुड़िया की कीमत से ज़्यादा है। ज़्यादा मैं वापिस देता हूँ। ये कहकर उसने 4 सीपें रख ली। और बाकी की बच्चे को वापिस दे दी। बच्चा बड़ी खुशी से वो सीपें जेब में रखकर बहन को साथ लेकर चला गया।

यह सब उस दुकान का नौकर देख रहा था और उसने आश्चर्य से मालिक से पूछा, मालिक! इतनी महंगी गुड़िया आपने केवल 4 सीपों के बदले में दे दी? दुकानदार हँसते हुए बोला, हमारे लिए ये केवल सीप हैं पर उस 6 साल के बच्चे के लिए अतिशय मूल्यवान हैं। और अब इस उम्र में वो नहीं जानता कि पैसे क्या होते हैं। पर जब वह बड़ा होगा ना, और जब उसे याद आयेगा कि उसने सीपों के बदले बहन को गुड़िया खरीद कर दी थी। तब उसे मेरी याद ज़रूर आयेगी। वह सोचेगा कि यह विश्व अच्छे मनुष्यों से भरा हुआ है। यही बात उसके अन्दर सकारात्मक दृष्टिकोण बढ़ाने में मदद करेगी और वो भी अच्छा इंसान बनने के लिए प्रेरित होगा।

ईश्वर का वास

एक सन्यासी घूमते-फिरते एक दुकान पर आये, दुकान में अनेक छोटे-बड़े डिब्बे थे। सन्यासी के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई। एक डिब्बे की ओर इशारा करते हुए सन्यासी ने दुकानदार से पूछा, इसमें क्या है? दुकानदार ने कहा, इसमें नमक है। सन्यासी ने फिर पूछा, इसके पास वाले में क्या है? दुकानदार ने कहा, इसमें हल्दी है। इसी प्रकार सन्यासी पूछते गए और दुकानदार बतलाता रहा, अंत में पीछे रखे डिब्बे का नंबर आया तो सन्यासी ने पूछा उस अंतिम डिब्बे में क्या है? दुकानदार बोला, उसमें श्रीकृष्ण है। सन्यासी ने हैरान होते हुए पूछा श्रीकृष्ण! भला यह श्रीकृष्ण किस वस्तु का नाम है भाई? मैंने तो इस नाम के किसी सामान के बारे में कभी नहीं सुना। दुकानदार सन्यासी के भोलेपन पर हँस कर बोला, महात्मन! और डिब्बों में तो भिन्न-भिन्न वस्तुएं हैं, पर यह डिब्बा खाली है, हम खाली को खाली न कहकर श्री कृष्ण कहते हैं। सन्यासी की आंखें खुली की खुली रह गई। जिस बात के लिए मैं दर-दर भटक रहा था, वो बात मुझे आज एक व्यापारी से समझ आ रही है। वो सन्यासी उस छोटे से किराने के दुकानदार के चरणों में गिर पड़ा, ओह! तो खाली में श्रीकृष्ण रहता है। सत्य है भाई, भरे हुए में श्रीकृष्ण कहाँ? काम, क्रोध, लोभ, मोह, लालच, अभिमान, ईर्ष्या, द्वेष और भली-बुरी, सुख-दुःख की बातों से जब दिल, दिमाग भरा रहेगा तो उसमें ईश्वर का वास कैसे होगा? ईश्वर तो खाली यानी साफ सुथरे मन में ही निवास करता है। एक छोटी सी दुकान वाले ने सन्यासी को बहुत बड़ी बात समझा दी थी। आज सन्यासी अपने आनन्द में था।

दिल्ली-हरिनगर। श्रीपद येस्सो नायक,मिनिस्टर ऑफ स्टेट,डिफेन्स को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी।

बिहार शरीफ-बिहार। श्याम किशोर झा,जिला न्यायाधीश,नालंदा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अनुपमा।

किशनगढ़ रेनवाल-राज.। सेवाकेन्द्र पर आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम में विधायक निर्मल कुमावत को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूनम।

ताइवान। चियांग काइ शेक मेमोरियल हॉल, तमसुई रिवर एरिया तथा काऊशुंग पोर्ट एरिया में ईश्वरीय सेवाओं के दौरान नन्स के साथ आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् राजयोगी ब्र.कु. आत्मप्रकाश,माउण्ट आबू तथा ब्र.कु. मोरनी। इस अवसर पर उन्हें रक्षासूत्र भी बांधा गया।

फाज़िल्का-पंजाब। रक्षाबंधन कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में एस.एस.पी. भुपिन्दर सिंह, एस.पी. कुलदीप शर्मा, एस.पी. रणबीर सिंह, डी.एस.पी. भुपिन्दर सिंह, ब्र.कु. प्रिया तथा अन्य।

गया-ए.पी. कॉलोनी। गुरूद्वारा में रक्षाबंधन कार्यक्रम के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. सुनीता।

दिल्ली-इन्द्रपुरी। सांसद अनुप्रिया पटेल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बाला।

वरेली-बजरिया पूरनमल(उ.प्र.)। ए.डी.आर.एम. आशीष अग्रवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पारुल।

भद्रक-ओडिशा। विधायक संजीव मलिक को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड देते हुए ब्र.कु. मंजू।